

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 7, 3 मसीह के पद: पैगंबर, पुजारी और राजा, भाग 2

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 7 है, मसीह के तीन पद, भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा, भाग 2।

हम मसीह के तीन पदों - भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा - का अध्ययन कर रहे हैं, और वर्तमान में, हम उनके भविष्यवक्ता पद के साथ काम कर रहे हैं।

हमने कहा है कि व्यवस्थाविवरण 18:14 से 22, मसीह में परिणत होने वाले भविष्यवक्ताओं की पूरी पंक्ति की बात करता है, जैसा कि प्रेरितों के काम 3:22 में पतरस ने पहचाना है। और इसलिए मैं आगे बढ़कर यीशु को महान भविष्यवक्ता के रूप में बताना चाहूँगा, जैसा कि पर्वत पर उपदेश में प्रदर्शित किया गया है, यूहन्ना 1 में वचन के रूप में, और यूहन्ना के सुसमाचार में मैं हूँ कथनों के वक्ता के रूप में। पर्वत पर उपदेश में, कई बार, एक, दो, तीन, चार, पाँच बार, कम से कम यीशु कहते हैं, तुमने सुना है कि यह कहा गया था, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, मत्ती 5:21, 22, 27, 28, 33, 34, 38, 39, 43, 44, हर बार वह पुराने नियम की फरीसी और लिपिकों की गलत व्याख्याओं को सही कर रहा है। एक बार उन लोगों के बीच में, वह यह नहीं कहता कि तुमने सुना है, वह कहता है कि यह कहा गया था, तलाक के लिए अनुमति की बात करते हुए, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ।

यीशु वास्तव में एक आधिकारिक भविष्यवक्ता हैं। मैंने सोचा कि कुछ समय निकालकर पर्वत पर उपदेश के माध्यम से यीशु की मौलिक और अद्भुत शिक्षा को देखना अच्छा रहेगा। वह एक मौलिक शिक्षक हैं।

वह शास्त्रियों और फरीसियों की तरह नहीं सिखाता, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की तरह सिखाता है जिसके पास बहुत अधिकार है। वास्तव में, दुष्टात्माएँ उसकी आज्ञा मानती हैं, और परमेश्वर की सृष्टि उसकी आज्ञा मानती है। पहाड़ी उपदेश के अलग-अलग विषय हो सकते हैं, और इस प्रकार, इसे अलग-अलग तरीकों से उपदेश दिया और सिखाया जा सकता है।

और एक विषय, बेशक, परमेश्वर की धार्मिकता है। लेकिन मैं एक अलग विषय पर आगे बढ़ना चाहता हूँ, और वह विषय है परमेश्वर का हमारे पिता के रूप में होना। और इसलिए मैं धर्मोपदेश को इस तरह से देखना चाहता हूँ।

यह स्वर्ग में हमारे पिता के रूप में परमेश्वर के साथ पृथ्वी पर हमारे जीवन जीने के बारे में बात करता है, मैथ्यू के सुसमाचार के अध्याय 5 की आयत 1 में छोटी सी सेटिंग के बारे में। बेशक, यह उपदेश मैथ्यू 5 से 7 में दिया गया है, जो एक भविष्यवक्ता के रूप में यीशु के मंत्रालय के सबसे व्यापक भागों में से एक है।

में, वे एक पैटर्न का पालन करते हैं। यीशु कहते हैं, सचमुच खुश, धन्य हैं वे लोग जिनके जीवन को इस तरह से चित्रित किया गया है, और फिर क्योंकि, या इसलिए, वे अंततः बचाए जाएंगे। यही उस प्रारूप का अर्थ है।

उदाहरण के लिए, धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है। श्लोक 10 में एक समावेश है, जो यह भी कहता है कि स्वर्ग का राज्य उनका है। तो, पुस्तक किसी भी छोर पर समाप्त होती है, और यह स्वर्ग के अंतिम राज्य के बारे में बात कर रही है।

बेशक, यह उपदेश आज के जीवन से संबंधित है, जिसे सही तरीके से समझा जाना चाहिए, यह ध्यान में रखते हुए कि यीशु की शिक्षाएँ मौलिक हैं, और हमें सावधान रहना चाहिए। इसी कारण से कई ईसाइयों ने उपदेश को गलत समझा है। लेकिन मैं पूरी बात नहीं कहूँगा, लेकिन वास्तव में वे लोग खुश हैं जो अपनी आध्यात्मिक गरीबी को ईश्वर और उनकी क्षमा और कृपा की अंतिम आवश्यकता के रूप में देखते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है।

सचमुच खुश हैं वे लोग जो अपने पापों पर शोक करते हैं, क्योंकि अंत में उन्हें परमेश्वर द्वारा सांत्वना दी जाएगी। और ऐसा ही होता है, लेकिन जो श्लोक वास्तव में उस विषय से मेल खाता है जिस पर मैं बात कर रहा हूँ वह श्लोक 9 है। धन्य हैं वे जो शांति स्थापित करते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। इसमें परमेश्वर को पिता के रूप में उल्लेखित नहीं किया गया है, लेकिन यह इसका संकेत देता है।

धन्य हैं, जो एक दूसरे के साथ अपने संबंधों में शांति की तलाश करते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे परमेश्वर के साथ अपने संबंधों में शांति की तलाश करते हैं। उन्हें परमेश्वर के पुत्र कहा जाएगा। और फिर से, प्रत्येक धन्य वचन अंतिम उद्धार की बात करता है।

तो, यह हमारे अंतिम दत्तक ग्रहण या परमेश्वर द्वारा हमें अपने पुत्र या पुत्री के रूप में अंतिम रूप से स्वीकार किए जाने के बारे में बात कर रहा है। बेशक, अब इसके निहितार्थ हैं, लेकिन एक बार फिर, यहाँ पहले से ही धन्य वचनों में, धर्मोपदेश के परिचय में, जो ईश्वरीय पुरुषों और महिलाओं के चरित्र का वर्णन करता है, हमारे पास परमेश्वर के परिवार और पिता से संबंधित होने का यह संदर्भ है। फिर से, मुख्य जोर अंततः है, लेकिन निहितार्थ, निश्चित रूप से, यह है कि हम पहले से ही उसके हैं, जैसा कि हम यीशु के इस सिद्धांत, पिता के पितृत्व और हमारे पुत्रत्व के अनुप्रयोगों में देखेंगे जो धर्मोपदेश के माध्यम से आगे बढ़ता है।

मत्ती 5 का शेष भाग, धन्य वचनों के बाद, श्लोक 11 और 12 में उत्पीड़न का सामना कर रहे शिष्यों के लिए एक अनुप्रयोग है। वहाँ भी, यीशु कहते हैं, तुम सच में खुश हो सकते हो क्योंकि तुम मेरे लिए पीड़ित हो, और तुम्हें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। यह वैसा ही है जैसा उन्होंने तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं और तुमसे पहले के परमेश्वर के लोगों के साथ व्यवहार किया था।

लेकिन अध्याय 5 का बाकी हिस्सा दुनिया में, यहाँ और अभी, इस ज्ञान के साथ जीने के बारे में बात करता है कि स्वर्ग में परमेश्वर हमारा पिता है। पृथ्वी पर, दुनिया में, परमेश्वर को अपना स्वर्गीय पिता मानकर जीना। इसलिए, हम पद 16 में देखते हैं, जिस तरह पहाड़ी पर बसा शहर,

वहाँ की ज्योति चमकती है और छिप नहीं सकती, उसी तरह, दूसरों के सामने अपनी ज्योति चमकाओ ताकि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें और तुम्हारे पिता की महिमा करें जो स्वर्ग में हैं।

विश्वासियों को संसार से अलग नहीं होना चाहिए ; उन्हें संसार के अनुरूप नहीं बनना चाहिए, और न ही उन्हें संसार से अलग होना चाहिए। बल्कि, उन्हें संसार में प्रवेश करना चाहिए और उसके बीच में रहना चाहिए और अपने पिता के लिए जीना चाहिए। और उन्हें अच्छा करना चाहिए, उन्हें अच्छे काम करने चाहिए, इस बात के प्रमाण के रूप में कि वे परमेश्वर को उसके अनुग्रह से जानते हैं, और जब वे ऐसा करते हैं, और लोगों को ऐसा करना चाहिए, तो उनका लक्ष्य यह नहीं है कि लोग उनकी प्रशंसा करें, और यीशु ने बाद में धर्मोपदेश में इसकी निंदा की, बल्कि उन्हें अपने पड़ोसी के लिए अच्छा करना चाहिए, विशेष रूप से इस संदर्भ में, अपने बचाए न गए पड़ोसी के लिए, ताकि परिणामस्वरूप लोग परमेश्वर को महिमा दें।

हमें इस ज्ञान के साथ दुनिया में जीना है कि स्वर्ग में परमेश्वर हमारा पिता है। हम इसे फिर से श्लोक 44 और 45 में देखते हैं। आपने सुना होगा कि कहा गया था, 43, तुम अपने पड़ोसी से प्यार करो और अपने दुश्मन से नफरत करो।

न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल के शुरुआती संस्करण में, मुझे नहीं पता कि यह अब भी ऐसा करता है या नहीं, लेकिन इसमें पुराने नियम के उद्धरण बड़े अक्षरों में लिखे गए हैं। यह सब बड़े अक्षरों में था। बाद के संस्करण में केवल पहला भाग बड़े अक्षरों में लिखा गया क्योंकि अपने दुश्मन से नफरत करना बड़े अक्षरों में नहीं था; यह पुराने नियम के अपने पड़ोसी से प्यार करने के सिद्धांत की फरीसी व्याख्या थी, मुझे कहना चाहिए कि गलत व्याख्या थी।

इसलिए, आपको अपने शत्रु से प्रेम करने और उससे घृणा करने का अधिकार है। नहीं, यीशु कहते हैं, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, पुराने नियम की आलोचना या सुधार नहीं कर रहा हूँ, बल्कि पुराने नियम पर फरीसियों की टिप्पणी को सही कर रहा हूँ। मैं तुमसे कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो ताकि तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान बन सको।

क्योंकि वह अपने पुत्र को बुरे और भले दोनों पर चढ़ाता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या प्रतिफल है? क्या कर वसूलनेवाले भी ऐसा नहीं करते? और यदि तुम केवल अपने भाइयों को नमस्कार करो, तो तुम दूसरों से क्या बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? इसलिए, तुम्हें सिद्ध होना चाहिए, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। स्वर्गीय पिता के प्रति हमारा पुत्रत्व शत्रुओं के लिए प्रार्थना करने और यहाँ तक कि उनसे प्रेम करने में प्रदर्शित होता है, यह दर्शाता है कि हमें परमेश्वर द्वारा क्षमा किया गया है और प्रेम किया गया है।

फिर से, उस समय के इस्राएल के नेताओं की शिक्षाओं के विपरीत, यीशु की शिक्षाएँ कट्टरपंथी थीं। यह जानबूझकर लोगों के विचारों के विरुद्ध है ताकि लोग समझ सकें कि उन्हें प्रभु की आवश्यकता है क्योंकि उनके नेता अंधे लोग हैं जो उन्हें खाई में ले जा रहे हैं। अध्याय 5 की

अंतिम आयत कहती है, इसलिए, आपको सिद्ध होना चाहिए, क्योंकि आपका स्वर्गीय पिता सिद्ध है।

इसे कम नहीं किया जाना चाहिए। आप कहते हैं, क्या आप मुझे यह बताना चाहते हैं कि बाइबल ईसाई जीवन के लिए एक असंभव लक्ष्य देती है? हाँ, यह लक्ष्य के रूप में पूर्ण पूर्णता देती है। यह अप्राप्य है।

आप सही कह रहे हैं। क्या प्रभु को यह नहीं पता? बेशक, उसे यह पता है। हम 1 पतरस 1 में भी यही बात देखते हैं, लैव्यव्यवस्था का हवाला देते हुए।

शायद यह 11:44 है, मुझे यकीन नहीं है। अपने पिता के समान पवित्र बनो, जैसा कि परमेश्वर पवित्र है। पवित्र बनो जैसा कि परमेश्वर पवित्र है, प्रभु कहते हैं।

क्या? यह असंभव है। हाँ। परमेश्वर मसीही जीवन के लिए असंभव लक्ष्य क्यों देता है? इसके दो कारण हैं।

नंबर एक, हालाँकि वह हमें अपने अनुग्रह से स्वतंत्र रूप से स्वीकार करता है, वह हमें नम्र बनाने और हमें याद दिलाने के लिए असंभव मानक देता है कि हर दिन, हमें उसके अनुग्रह की आवश्यकता है। हम न केवल विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा एक बार और हमेशा के लिए बचाए जाते हैं, बल्कि हम विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रह से हर दिन ईसाई जीवन जीते हैं। इसलिए, यह हमें नम्र बनाता है और हमें परमेश्वर के अनुग्रह की ओर ले जाता है, न केवल उसके प्रेम के रूप में जो हमें शुरू में अपने परिवार में स्वीकार करता है बल्कि पिता की शक्ति और प्रावधान के रूप में भी।

हमने अनुग्रह को कम कर दिया है। इसका मतलब है ईश्वर का अकारण अनुग्रह या प्रेम। वास्तव में, यह उससे भी अधिक शक्तिशाली है।

यह उसका अनुग्रह और प्रेम है, जो हमारे योग्य है, न कि केवल अयोग्य। यह इसके विपरीत है। हम नरक के लायक हैं, और हमें स्वर्ग मिलता है।

हम उनकी नाराज़गी के हकदार हैं, और उनके परिवार में हमारा स्वागत है। लेकिन सिर्फ़ इतना ही नहीं। परमेश्वर की कृपा भी उनकी शक्ति है।

जैसा कि 2 कुरिन्थियों 12 में बताया गया है, परमेश्वर ने पौलुस के शरीर में एक कांटा चुभाया। पौलुस ने परमेश्वर से इस शारीरिक बीमारी, शायद खराब दृष्टि से छुटकारा दिलाने के लिए कहा। गलातियों 4, हम निश्चित नहीं हैं। लेकिन उसने बार-बार प्रभु से विनती की, और परमेश्वर ने कहा, नहीं, मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए पर्याप्त है। समानता देखें, क्योंकि मेरी शक्ति निर्बलता में सिद्ध होती है।

परमेश्वर चाहता है कि हम कमज़ोर हों, अपनी ज़रूरतों को समझें, ताकि हम अपने जीवन में हर दिन उसकी कृपा पर भरोसा कर सकें। इसलिए, मत्ती 5:48 में, और 1 पतरस 1 में, अन्य स्थानों

के अलावा, ईसाई जीवन के लिए मानक पूर्ण पूर्णता है और अप्राप्य है। इसलिए, जो कहावत आप कभी-कभी सुनते हैं, परमेश्वर हमें कभी ऐसा कुछ करने की आज्ञा नहीं देगा जो संभव नहीं है, गलत है।

वह जानबूझकर ऐसा करता है ताकि हमें हमारी जगह पर रख सके। हम उद्धार न पाने वाले लोगों से बेहतर नहीं हैं। हम परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं और हमें उनसे साथी पापियों के रूप में प्रेम करना चाहिए जिन्हें उस अनुग्रह को जानने की आवश्यकता है, और हमें हर दिन उसके अनुग्रह की ओर ले जाना चाहिए, और मसीही जीवन जीने के लिए उसकी आत्मा पर निर्भर रहना चाहिए क्योंकि यह कोई स्व-सहायता कार्यक्रम नहीं है।

ओह, हम प्रयास करते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन हम परमेश्वर के अधीन हैं और उसकी कृपा और आत्मा पर निर्भर हैं। उपदेश का अगला भाग फिर से परमेश्वर के महान भविष्यद्वक्ता के रूप में यीशु की जबरदस्त सेवकाई को दर्शाता है, जैसा कि हम अध्याय 6:1 से 18 में देखते हैं, स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर के साथ धार्मिक क्षेत्र में रहते हुए। क्या यह सब आध्यात्मिक जीवन है? हाँ, लेकिन यहाँ यीशु उन तीन तत्वों को चुनता है जिनके कारण फरीसी उन्हें औसत पुरुष या महिला से अलग करते थे।

फरीसियों के बारे में हमारा दृष्टिकोण काफी हद तक नकारात्मक है, और यह यीशु और पौलुस से आता है, लेकिन पहली सदी के यहूदी फरीसियों का बहुत सम्मान करते थे क्योंकि वे कानून की अपेक्षा से ज़्यादा प्रार्थना करते थे, दान देते थे, प्रार्थना करते थे और उपवास करते थे। वे परमेश्वर की बातों के लिए बहुत उत्साही थे। वे कानून के लिए बहुत उत्साही थे।

उन्होंने ज़्यादा दिया, उन्होंने ज़्यादा प्रार्थना की, और उन्होंने ज़्यादा उपवास किया। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, कोई संयोग नहीं है, कि यीशु 6, 1 से 4 में देने, 5 से 15 में प्रार्थना करने और फिर 16 से 18 में उपवास करने की बात करता है। एक बार फिर, वह जानबूझकर और मौलिक रूप से फरीसी शिक्षा से टकराता है।

क्यों? दो कारण। दरअसल, फरीसियों पर दया दिखाने के लिए। मैं प्रेरितों के काम 6 पर आश्चर्यचकित हूँ, और शायद यह छंद 6 के आसपास है। यहाँ तक कि कई पुजारियों ने भी प्रेरितों की सेवकाई के माध्यम से यीशु पर विश्वास किया।

ऐसा नहीं होता अगर यीशु यहूदी नेताओं के नियमों के अनुसार काम करते। दया में, और ऐसा करने में उसने खुद को कठिन बना लिया, उसने बार-बार उन पर तीखा प्रहार किया। मत्ती 23, फरीसियों पर सात विपत्तियाँ।

वाह! उसने उन्हें चिढ़ा दिया। उसने उन्हें उकसाया ताकि वे उद्धार की अपनी ज़रूरत को समझ सकें। प्रेरितों के काम 6, आयत 6 के आस-पास, उनमें से कई ने ऐसा किया।

बहुत से लेवी और बहुत से याजक परिवार यीशु पर विश्वास करते थे। वाह! दूसरा कारण लोगों को फरीसी शिक्षा के बंधन से मुक्त करना था। इसलिए, इस खंड में बार-बार हम देखते हैं कि हमें उन आध्यात्मिक चीजों को जीना और करना है जो हम करते हैं।

देना, सेवा करना, जो भी हो, परमेश्वर के लिए अपने आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग करना, मनुष्यों द्वारा देखे जाने और उनकी प्रशंसा किए जाने के लिए नहीं, बल्कि हमें उन चीजों को अपने पिता की सेवा करते हुए करना है जो स्वर्ग में हैं। हम इसे श्लोक 1 में तुरंत देखते हैं। यह नारा है, इस अध्याय के 1 से 18 तक का विषय सारांश है। दूसरों के सामने अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन करने से सावधान रहें ताकि वे आपको देखें, क्योंकि तब आपको अपने पिता से कोई इनाम नहीं मिलेगा जो स्वर्ग में हैं।

इसलिए, जब आप ज़रूरतमंदों को देते हैं, तो अपने सामने तुरही न बजाएँ, जैसा कि कपटी लोग सभाओं और सड़कों पर करते हैं, ताकि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। हमें नहीं लगता कि यह शाब्दिक है, लेकिन हम बात समझ गए हैं। यह दूसरों को यह दिखाने के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा लगती है कि हम देते हैं।

मैं तुमसे सच कहता हूँ, वे अपना पूरा इनाम पा चुके हैं। उनका इनाम मनुष्यों की प्रशंसा है। इस प्रकार, उनका धर्म पृथ्वी से ऊपर नहीं उठता।

यह स्वर्ग तक नहीं पहुंचता। यह, वे पृथ्वी से जुड़े हुए हैं। अगर आप चाहें तो वे वास्तव में मनुष्य को खुश करने वाले हैं।

लेकिन जब आप ज़रूरतमंदों को देते हैं, तो यीशु कहते हैं, मत्ती के 6 3, अपने बाएं हाथ को यह न बताएं कि आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है। यह शाब्दिक नहीं है। दूसरे शब्दों में, जितना संभव हो, इसे गुप्त रूप से करें और अपने ऊपर ध्यान न दें।

मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने गंभीरता से कभी भी किसी ऐसी चीज़ के लिए दान नहीं दिया जिसके बारे में उन्होंने सोचा था कि प्रभु उन्हें देना चाहते हैं क्योंकि किसी को पता चल जाता कि वे यीशु की शिक्षा की मौलिक प्रकृति से चूक गए हैं। बेशक, कुछ लोगों को कभी न कभी पता चल ही जाएगा, लेकिन आपके दिल में, लक्ष्य यह नहीं है कि लोग कहें, यार, वह कितनी आध्यात्मिक दिग्गज है। नहीं, ऐसा नहीं है।

कभी-कभी, लोग नोटिस करेंगे, और वे करेंगे, और लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। फिर से, यीशु की शिक्षा यहाँ पूर्ण नहीं है। याद रखें, लोगों के सामने अपने अच्छे काम करो ताकि वे स्वर्ग में तुम्हारे पिता की प्रशंसा करें।

अपरिहार्य रूप से, कुछ लोग देखेंगे कि यह उपदेश यीशु के साथ व्यवहार कर रहा है, जो न केवल कानून के अक्षर से निपटता है, बल्कि वह हृदय तक, कानून की भावना तक पहुँचता है। और यह भी, कानून के लिए उपयुक्त है, उचित है। 10वीं आज्ञा, अच्छा दुःख, हृदय में बहुत गहराई तक जाती है।

यह लालच के खिलाफ़ एक आज्ञा है। इसलिए, यीशु पुराने नियम की भावना में हैं, फरीसी व्याख्याओं को अस्वीकार करते हैं जो कानून को विकृत करते हैं और इसे अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करते हैं। लड़का, वह इस पर पागल है।

और ऐसी परंपराएँ हैं जिन्हें उन्होंने पुराने नियम में जोड़ा, फिर से, अपने स्वयं के लाभ के लिए। यीशु इन चीजों पर हमला करता है और पुराने नियम की नैतिकता को पुनर्स्थापित करता है। क्या वह इसे आगे बढ़ाता है? ज़रूर, अपने व्यक्तित्व के कारण, क्योंकि वह राजा है जो अपना आध्यात्मिक साम्राज्य लाता है।

लेकिन अभी हमारा जोर उसके राज्य पर इतना नहीं है, हालाँकि पद व्यक्ति से अविभाज्य हैं। और यह भी पुजारी की बात है, लेकिन यह उसके परमेश्वर के महान भविष्यवक्ता होने के बारे में है। यदि आप एक हाथ को यह बताए बिना देते हैं कि दूसरा क्या कर रहा है ताकि आपका दान गुप्त रहे, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आपका पिता, जो गुप्त रूप से देखता है, आपको पुरस्कृत करेगा।

और प्रार्थना के विषय में भी यही बात है। उन कपटियों के समान मत बनो जो आराधनालयों में प्रार्थना करते हैं, और चाहते हैं कि लोग उन्हें देखें। उन्होंने इसका प्रतिफल पाया, अर्थात् मनुष्यों की प्रशंसा।

लेकिन जब आप प्रार्थना करते हैं, तो अपनी कोठरी में चले जाएँ और दरवाज़ा बंद कर लें। कुछ लोगों ने सचमुच इसी वजह से प्रार्थना कोठरी बना रखी है। मैं इसका विरोध नहीं करता।

लेकिन फिर भी, मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने यीशु की शिक्षाओं की मौलिक प्रकृति और उनके द्वारा अतिशयोक्ति के उपयोग की गलतफहमी के कारण प्रार्थना सभाओं में प्रार्थना नहीं की है। मुद्दा यह है कि, ठीक है, इस बात को एक बार महान प्रचारक डी.एल. मूडी ने बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया था। एक नास्तिक व्यक्ति मूडी की सभाओं में इस अज्ञानी उपदेशक का मज़ाक उड़ाने गया था।

मूडी बहुत ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था, लेकिन वह प्रभु से प्यार करता था, उसने बाइबल का बहुत ध्यान से अध्ययन किया और उसने सत्य का प्रचार किया। और इस बड़े धर्मयुद्ध में मूडी ने एक स्थानीय पादरी को प्रार्थना करने के लिए बुलाया। वह आदमी लगातार प्रार्थना करता रहा और ऐसा लग रहा था कि वह लोगों को दिखाने के लिए प्रार्थना कर रहा था।

और यह नास्तिक इस पर विश्वास नहीं कर सका। यह वास्तव में खुल गया, इसने सुसमाचार के लिए उसका दिल खोलना शुरू कर दिया। क्योंकि मूडी माइक्रोफोन के पास गया और कहा, क्षमा करें, मेरे भाई, जब आप अपनी प्रार्थना समाप्त करते हैं, तो हम उस तरह के भजन नंबर की ओर मुड़ने जा रहे हैं।

दूसरे शब्दों में, उन्होंने इस बात को पहचाना कि इसमें फरीसी प्रवृत्ति थी। यह पादरी के लिए अपने शहर के सामने चमकने का मौका था, और मूडी को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी क्योंकि यीशु इस संदेश में, इस धर्मयुद्ध में चमकने वाले थे, और ऐसा कुछ भी नहीं था।

वाह, वह आदमी बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा, यह आदमी सच्चा है। उसने अपनी आँखें और कान खोले, और भगवान की कृपा से, भगवान ने मूडी के सरल संदेश के लिए उसका दिल खोल दिया।

और उपदेशक की तुलना में अधिक शिक्षित नास्तिक व्यक्ति, जो अधिक शिक्षित था, यीशु पर विश्वास करता था। यीशु के माध्यम से, मुझे माफ कीजिए, मूडी ने पहाड़ी पर उपदेश में यीशु की नैतिकता का पालन किया, यीशु महान पैगंबर थे। जब आप प्रार्थना करने जाते हैं, तो अपने कमरे में जाएं, दरवाजा बंद करें, और अपने पिता से गुप्त रूप से प्रार्थना करें।

और जब तुम प्रार्थना करो, तो तुम्हारा पिता, जो गुप्त में देखता है, तुम्हें पुरस्कृत करेगा। और उन मूर्तिपूजकों की तरह मत बनो जो अपनी खोखली बातों को ढेर लगाते हैं ताकि उन्हें सुना जा सके। मैं बाल के पुजारियों के बारे में सोचता हूँ जो एलिय्याह के साथ युद्ध में वेदी के चारों ओर उछल-कूद कर रहे थे।

हे मेरे वचन, वे सोचते हैं कि उनके बहुत से शब्दों से उनकी बात सुनी जाएगी। उनके जैसे मत बनो, आठवीं आयत, क्योंकि तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए, इससे पहले कि तुम उससे पूछो। हे हमारे स्वर्गीय पिता, इस तरह प्रार्थना करो।

पहाड़ पर दिए गए उपदेश का विश्लेषण अलग-अलग तरीकों से किया जा सकता है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह एकमात्र तरीका है, लेकिन एक वैध और शिक्षाप्रद तरीका यह है कि इसे यीशु की शिक्षा के रूप में देखा जाए, महान भविष्यवक्ता यीशु हमें सिखा रहे हैं कि हमें धरती पर अपना जीवन कैसे जीना चाहिए, इस ज्ञान के साथ कि स्वर्ग में सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे पिता हैं। उपवास के लिए भी यही बात लागू होती है।

यीशु कहते हैं, दूसरों को दिखाने के लिए उपवास मत करो। जब तुम ऐसा करते हो, जब लोग ऐसा करते हैं, श्लोक 16, तुम जानते हो कि वह क्या कहने जा रहा है। उन्हें पूरा इनाम मिलता है। लेकिन जब तुम उपवास करते हो, तो जितना संभव हो उतना सामान्य दिखो।

इतना दुखी दिखकर यह मत दिखाओ कि तुम कितने आध्यात्मिक हो। तुम चाहते हो कि तुम्हारा पिता देखे जो गुप्त में देखता है, और तुम्हारा पिता जो गुप्त में देखता है, वह तुम्हें पुरस्कृत करेगा। यदि अध्याय पाँच, आनंदमय वचनों के बाद, परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण दुनिया में अपना जीवन जीने के बारे में बात करता है, इस ज्ञान के साथ कि परमेश्वर हमारा पिता है, और यदि छठा, एक से अठारह तक, हमारे अपने संदर्भ में उन विशेष रूप से धार्मिक चीजों को करने की शिक्षा देता है, पूजा, बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, सुसमाचार प्रचार, जो भी हो, परमेश्वर ने हमें प्रभु की सेवा करने के लिए जो उपहार दिए हैं उनका उपयोग करना, यीशु कहते हैं, हमें ऐसा करना चाहिए, पुरुषों और महिलाओं की प्रशंसा पाने के लिए नहीं, बल्कि हमें अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने के लिए ऐसा करना चाहिए। यीशु की सेवा करने और अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए अपने उपहारों का उपयोग करने में आनंद है। यह कितना बड़ा आशीर्वाद है।

फिर, 6:19-34 एक ऐसे क्षेत्र के बारे में बात करता है जो पहली सदी में इक्कीसवीं सदी की तरह

ही प्रासंगिक है, और वह है एक स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर के साथ रहना, अपनी संपत्ति और संपत्ति को संभालना।

सबसे पहले, वे कहते हैं, आपका अंतिम लक्ष्य धरती पर जितना संभव हो उतना धन इकट्ठा करना नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वर्ग में धन इकट्ठा करना होना चाहिए। धरती पर धन इकट्ठा न करें जहाँ कीड़े और जंग नष्ट हो जाते हैं और जहाँ चोर घुसकर चोरी कर लेते हैं, बल्कि अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करें। इक्कीस एक अद्भुत सिद्धांत है।

क्योंकि जहाँ तुम्हारा खजाना है, वहाँ तुम्हारा दिल भी होगा। हम किसी व्यक्ति की आध्यात्मिकता का अंदाजा कुछ हद तक इस बात से लगा सकते हैं कि लोग अपना पैसा कहाँ लगाते हैं। इस अंश का एक और प्रयोग मैंने कई बार किया है जब ईसाइयों और ईसाई संस्थाओं द्वारा मेरे साथ गलत व्यवहार किया गया और उनके प्रति बुरा रवैया रखने का प्रलोभन दिया गया, मैं यहाँ सिर्फ़ खुलकर कह रहा हूँ, मैं किसी का नाम नहीं लूँगा, लेकिन मैं जानबूझ कर उन्हें आर्थिक रूप से सहायता करता हूँ, क्योंकि मैंने पाया कि प्रभु ने तब मेरा रवैया बदल दिया।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह प्रभु यीशु के मन में मुख्य अनुप्रयोग था, लेकिन जहाँ आपका खजाना है, वहाँ आपका दिल भी होगा, और समर्थन करने के लिए, इसलिए मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उदार उद्यमों या उन लोगों का समर्थन करें जो सुसमाचार को बढ़ावा नहीं देते हैं, लेकिन शायद किसी समय किसी संस्था द्वारा आपके साथ गलत व्यवहार किया गया हो। इसे दें, और भगवान इसके प्रति आपकी बुरी भावनाओं को दूर कर देंगे। आप भगवान और पैसे दोनों की सेवा नहीं कर सकते, श्लोक 24।

हमें न केवल पृथ्वी पर, बल्कि स्वर्ग में भी अपने खजाने जमा करने चाहिए, जहाँ हमारे स्वर्गीय पिता हैं, बल्कि हमें धन के लिए चिंतित नहीं होना चाहिए। मैं स्वीकार करता हूँ कि यह मेरे जीवन में एक निरंतर संघर्ष है, और फिर भी परमेश्वर अच्छा है, और वह अद्भुत रूप से प्रदान करता है, लेकिन हमें, अपने राज्य में परमेश्वर के लिए चिंतित होना चाहिए, और हमारा पिता हमारे लिए भरपूर मात्रा में प्रदान करेगा। हम इसे श्लोक 26 और 32 में देखते हैं।

अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो, तुम क्या खाओगे, या क्या पीओगे, अपने शरीर के बारे में, तुम क्या पहनोगे। क्या जीवन शरीर में भोजन से बढ़कर नहीं है, कपड़ों से बढ़कर नहीं है? देखो, भगवान पक्षियों की देखभाल करते हैं, और वह फूलों को शानदार कपड़े पहनाते हैं, जैसे कि वे हों। यह एक तर्क है कि भगवान महान कार्य करते हैं।

वह इन तुच्छ गैर-मानव प्राणियों की परवाह करता है। क्या तुम उनसे ज़्यादा मूल्यवान नहीं हो? तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है, और वह सुंदर लिली को सजाता है। तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए।

इसलिए, लेकिन चिंता मत करो, आयत 31 में कहो, हम क्या खाएँगे? हम क्या पीएँगे? हम क्या पहनेंगे? इस संदर्भ में, अन्यजातियों के लिए, इसका मतलब है बचाए न गए लोग। जो लोग प्रभु को नहीं जानते वे इन चीज़ों की तलाश करते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें

इनकी ज़रूरत है। लेकिन पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब चीज़ें तुम्हें दे दी जाएँगी।

तुम्हारे पिता तुमसे प्यार करते हैं। तुम्हारे पिता तुम्हारी परवाह करते हैं। इसलिए, पैगम्बर यीशु ने संपत्ति और वित्तीय मामलों में कहा है कि सांसारिक धन-संपत्ति के लिए मत जियो।

बाइबल धन के खतरे के बारे में चेतावनी देती है। साथ ही, यह उन लोगों को चेतावनी देती है जो परमेश्वर के उपहारों से धनवान हैं कि वे उस धन का उपयोग परमेश्वर के राज्य को बढ़ावा देने के लिए करें। और फिर यीशु 26 से 34 में बदलाव करते हैं और कहते हैं, अपनी ज़रूरतों के बारे में चिंता मत करो क्योंकि तुम्हारा एक पिता स्वर्ग में है।

क्या आप नहीं समझते? यदि आप उन चीज़ों के बारे में चिंता करते हुए, बिना उद्धार पाए लोगों की तरह जीते हैं, तो आप उन्हें बताते हैं कि आपके पास कुछ नहीं है, कि स्वर्ग में कोई पिता नहीं है। लेकिन यदि आप आत्मविश्वास से जीते हैं, बेशक, अपनी नौकरी पर काम करते हैं और इसी तरह, भले ही आपको ज़रूरत हो और अपने पिता पर भरोसा करते हैं कि वह आपकी ज़रूरतें पूरी करेगा, तो आपका जीवन उसके लिए एक गवाही है कि स्वर्ग में एक पिता है, और वह आपका पिता है, और आप उसके बेटे या बेटी हैं, और वह अपने बच्चों की देखभाल करेगा। मैं मैथ्यू 7 को एक पूरे के रूप में देखता हूँ, जो कि पहाड़ी उपदेश का निष्कर्ष है, और कुछ जगहों पर, यह परमेश्वर को हमारे पिता के रूप में उल्लेख करता है।

7:1 से 6 तक, मूल रूप से कहता है, अब मैंने तुम्हें अद्भुत शिक्षा दी है। यह मेरा संक्षिप्त विवरण है। मैंने तुम्हें अद्भुत शिक्षा दी है।

इसका इस्तेमाल दूसरों को आंकने के लिए मत करो। इसका इस्तेमाल खुद को आंकने के लिए करो और फिर दूसरों की मदद करो। लेकिन इसे गोला-बारूद मत बनने दो जिससे तुम बाहर जाओ और दूसरों पर गोली चलाओ।

नहीं, नहीं, नहीं। नहीं, पहाड़ी उपदेश आपके दिल, दिमाग और जीवन के लिए है। और फिर इसके अनुसार आगे बढ़ें और ऐसा दिखें कि आप दूसरों की मदद कर सकते हैं।

और मुझे नहीं लगता कि यह ज्ञान अपने आप में पर्याप्त है। बल्कि, आपको स्वर्ग में अपने पिता की ज़रूरत है। पॉल कहेंगे कि आपको पवित्र आत्मा की ज़रूरत है।

इसलिए, पूछो, खोजो और खटखटाओ, और परमेश्वर उत्तर देगा। वह तुम्हें खोजने में सक्षम बनाएगा। वह तुम्हारे लिए द्वार खोल देगा।

इसका मतलब है कि आपको परमेश्वर की शक्ति, उसकी कृपा, उसकी आत्मा की आवश्यकता है। आपको पर्वत पर उपदेश को पूरा करने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है। सिद्धांत श्लोक 11 में दिया गया है।

यदि तुम जो बुरे हो, यीशु शब्दों को नहीं तोड़ते, अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हो, और तुम करते हो, तुम उन्हें कुछ बुरा नहीं देते जो संदर्भ में उनके द्वारा मांगी गई किसी अच्छी चीज़ के समान दिखता है। यदि तुम जो बुरे हो, अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हो, तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है, उनसे माँगने वालों को कितने अच्छे उपहार देगा? इसलिए, उससे माँगो। बाइबल की विषय-वस्तु, इस मामले में यीशु की पहली सदी के श्रोताओं के लिए भविष्यवाणी की सेवकाई, हमें पिता पर निर्भरता से दूर नहीं करती, बल्कि इसके विपरीत करती है।

यह हमें दिखाता है कि हमें उसके लिए जीने और उसका सम्मान करने के लिए उसकी ज़रूरत है। यीशु कहते हैं, मूर्ख मत बनो, मूर्ख मत बनो। तुम यहाँ पहाड़ पर मेरी शिक्षा का आनंद ले रहे हो, लेकिन धार्मिक भोले लोग मत बनो।

ज़्यादातर लोग पहाड़ी उपदेश के अनुसार जीने वाले नहीं हैं। इसके विपरीत, ज़्यादातर लोग चौड़े दरवाज़े और आसान रास्ते पर चलने वाले हैं जो विनाश की ओर ले जाता है। समझिए, यीशु कहते हैं, मैं जो कह रहा हूँ वह आसान नहीं है।

यह कठिन है। द्वार संकरा है; रास्ता कठिन है, और वह जीवन की ओर ले जाता है। और तुलनात्मक रूप से, बहुत कम लोग हैं जो इसे पाते हैं।

इसलिए जब हर कोई मेरी मौलिक भविष्यसूचक शिक्षाओं से खुश नहीं होता है, तो निराश मत होइए कि आपको अपना जीवन कैसे जीना चाहिए। वास्तव में, सावधान रहें। आपने मेरी शिक्षा को ईश्वर की ओर से स्वीकार किया है, और यह सच है क्योंकि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ, यीशु कहते हैं, और मैं आपको सच्ची धार्मिकता की शिक्षा दे रहा हूँ, फरीसी किस्म की नहीं, बल्कि हृदय की सच्ची धार्मिकता और जीवन में इसी तरह की अन्य बातें।

और मैं तुम्हें अपने पिता और मेरे पिता का आदर करना सिखा रहा हूँ जो स्वर्ग में हैं। लेकिन झूठे भविष्यवक्ता भी होंगे। इस संदर्भ में वे जो कहते हैं, उसे परखें, खास तौर पर यह परखें कि वे कैसे जीते हैं।

वहाँ एक समावेशन है। आप उन्हें उनके फलों से पहचान लेंगे, 16. आप उन्हें उनके फलों से पहचान लेंगे, श्लोक 20.

जैसा कि मेरे अद्भुत व्यवस्थित धर्मशास्त्री शिक्षक, रॉबर्ट जे. डनज़वीलर ने मुझे सिखाया, बाइबल की शिक्षा प्राप्त करने के लिए, आपको पूरी बाइबल का उपयोग करना होगा। अन्य स्थानों पर, हम इसे पहले से ही व्यवस्थाविवरण 18 में देखते हैं, जहाँ भविष्यवक्ता जो भगवान का भविष्यवक्ता होने का दावा करता है, ऐसी बातें कहता है जो सच नहीं होती हैं, कि वे झूठ बोलते हैं। इसी तरह, व्यवस्थाविवरण में पहले के एक अध्याय में, यह या तो 13 या 15 है, मैं खो गया हूँ, या तो व्यवस्थाविवरण 13 या 15 में, 13 जो होगा, शिक्षा यह है कि यदि भविष्यवक्ता की शिक्षा पिछले रहस्योद्घाटन से सहमत नहीं है, तो वह भी एक झूठा भविष्यवक्ता है।

तो, यहाँ, यीशु का ज़ोर जीवन पर है। इस तरह, वह वास्तव में अपने जीवन की ओर ध्यान आकर्षित कर रहा है। और यह मुझे यूहन्ना 8 की याद दिलाता है, मैं आपको सलाह नहीं देता, या मैं यह नहीं कहता कि यीशु ने अपने दुश्मनों के साथ क्या किया।

तुममें से कौन मुझे पाप के लिए दोषी ठहरा सकता है? हम देखेंगे कि उसका पाप रहित जीवन उसकी प्रायश्चित मृत्यु और विजयी पुनरुत्थान के लिए आवश्यक शर्तों में से एक है। यहाँ, तुम मेरी शिक्षा प्राप्त करोगे, यीशु कहते हैं, स्वर्ग में रहने वाले पिता के बारे में। हर किसी की शिक्षा को भोलेपन से स्वीकार न करें।

आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं, 1 यूहन्ना 4, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल गए हैं, और परमेश्वर उनका न्याय करेगा। इतना ही नहीं, केवल झूठे भविष्यद्वक्ता ही नहीं हैं, बल्कि झूठे शिष्य भी हैं। जो कोई मुझ से, मत्ती 7:21, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु जो मेरे पिता की इच्छा पर चलता है, वही फिर स्वर्ग में है।

उस दिन, बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, तेरे नाम से सामर्थ्य के काम नहीं किए? हो सकता है कि यह एक समय में NIV था; यह सिर्फ़ दो बार तेरे नाम से था। यह तीन बार है। यह बहुत ज़ोरदार है।

ये लोग यीशु के नाम पर काम करते थे, आध्यात्मिक उपहारों से जुड़े काम। इसलिए, अलौकिक घटनाएँ परमेश्वर की सच्चाई की पर्याप्त परीक्षा नहीं हैं। एक बार मेरे पास ब्राज़ील का एक छात्र था।

वह बहुत सावधान था। वह बहुत सावधान था। उसने कहा, मेरा देश एक बड़ा देश है।

और हमारे पास कैथोलिक चर्च है, और हमारे पास इंजील चर्च है, और हमारे पास बहुत से विश्वासी हैं। हमारे पास पंथ भी हैं। चूँकि मेरा अमेरिकी छात्र दृढ़ता और धर्मत्याग पर इस विशेष वैकल्पिक पाठ्यक्रम में बैठा था, इसलिए हम ग्रीक पाठ से काम कर रहे थे, एक के बाद एक अंश का अध्ययन कर रहे थे, धीरे-धीरे एक धर्मशास्त्र का निर्माण कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि हम इसे समझ नहीं सकते। लोग यीशु के नाम पर ये काम कैसे कर सकते हैं और उसे नहीं जानते? क्योंकि वह पद 23 में उन्हें बताता है, वह अंतिम न्याय के समय, मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था, और तुम से दूर चला जाऊंगा, हे अधर्म के काम करने वालों। यह आदमी बहुत सावधान था।

वह ब्राज़ील को पंथों का चिड़ियाघर नहीं बना रहा था, ठीक है? उदाहरण के लिए, कई इंजीलवादी, मजबूत इंजील प्रेस्बिटेरियन चर्च। लेकिन पंथ तो हैं। उसने एक खास पंथ और ऐसे लोगों के बारे में बात की जिन्हें वह जानता था और जो इससे ठीक हो गए थे।

वे यह कैसे करते थे? कभी-कभी, यीशु के नाम पर। वे आध्यात्मिक सर्जरी करते थे। चिकित्सक व्यक्ति की बांह पर इस तरह से जाता था, उसे खोलता था, ट्यूमर निकालता था, और उसे बंद कर देता था।

उन्होंने इसे सफ़ेद जादू और काला जादू कहा। निश्चित रूप से अलौकिक चीज़ें चल रही थीं। और, ज़ाहिर है, लोगों ने इसके लिए शोर मचाया।

और कुछ लोग इससे ठीक हो गए। और फिर मैं, अपने दिल में थोड़ी सी घबराहट के साथ क्योंकि मुझे इस आदमी पर बिल्कुल भरोसा नहीं था। लेकिन यहाँ हम एक क्लास पढ़ा रहे हैं, और अब उसने सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है, है न? तो, मैंने पूछा, आप उस संदर्भ में सत्य का निर्धारण कैसे करते हैं? ओह, उसका उत्तर सुंदर था।

मैं इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकता था, वह कहते हैं। चमत्कार से नहीं, अलौकिक कार्यों से नहीं, उन्होंने कहा। आप परमेश्वर के वचन से सत्य का निर्धारण करते हैं।

और परमेश्वर के वचन के अनुसार, यह एक पंथ था जो मेरे मित्रों और अन्य लोगों को अलौकिक घटनाओं से गुमराह कर रहा था। अमेरिकी छात्र जिन्होंने इस आदमी की बात सुनी, वे इसे और इस अंश को कभी नहीं भुलेंगे। यीशु के नाम पर चमत्कार करना संभव है, या अलौकिक, मैं इसे यीशु के नाम पर कहता हूँ, यीशु से संबंधित नहीं होना और स्वर्ग में रहने वाले पिता को नहीं जानना।

यह यीशु के अपने शब्दों के अनुसार है। ओह, हमें किसी के बारे में बहुत सावधानी से निष्कर्ष निकालना चाहिए, लेकिन यह हमारे संपूर्ण विश्वदृष्टिकोण और चित्र का हिस्सा होना चाहिए और उस प्रदर्शन सूची का हिस्सा होना चाहिए जिसके द्वारा हम वास्तविकता का मूल्यांकन करते हैं। प्रभु ने उपदेश को पिता के उल्लेख के साथ समाप्त नहीं किया, बल्कि प्रभु यीशु, महान भविष्यवक्ता जो परमेश्वर के राज्य को लाता है और जो एक पुजारी के रूप में क्रूस पर जाने वाला है, कहता है, अब तुमने पहाड़ पर मेरा उपदेश सुना है।

उस उपदेश का पालन करें क्योंकि दो प्रकार के घरों के निर्माण के दृष्टांत में, एक रेत पर और एक चट्टान पर, दोनों ही सत्य सुनते हैं। इसलिए रेत पर यह घर बनाने वाला व्यक्ति जानकारी की कमी के कारण नहीं है; यह आज्ञाकारिता की कमी के कारण है जिसके कारण विपत्ति आने पर उसका घर ढह जाता है। और वह व्यक्ति जो इस घर को ठोस चट्टान पर बनाता है, वह प्रभु यीशु के वचनों का पालन करता है।

यह एक सुंदर छोटा दृष्टांत है क्योंकि विपत्ति सभी पर आती है, जिसमें ईसाई भी शामिल हैं। और मैं हमेशा कहता हूँ, जब विपत्ति आप पर और आपके घर पर आती है, तो आप नीचे गिर जाते हैं, आप डूब जाते हैं। हम बहुत बड़े आध्यात्मिक दिग्गज नहीं हैं, लेकिन ईश्वर की कृपा से, उनकी कृपा हमें वापस सतह पर लाएगी।

और हमारे भाइयों और बहनों की मदद और प्रार्थनाओं के साथ, हम आगे बढ़ते रहेंगे, खासकर अगर हमारा जीवन महान भविष्यवक्ता, प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है। इस

संदर्भ में, विशेष रूप से पहाड़ी उपदेश की शिक्षाएँ। मैं थोड़ी देर बाद साझा करने जा रहा हूँ कि कैसे यीशु इब्रानियों 1:1 और 2 से महान भविष्यवक्ता हैं, लेकिन मैं ऐसा इब्रानियों अध्याय 1, आयत 1 और 2 के संदर्भ में करने जा रहा हूँ। इब्रानियों का अध्याय 1 वास्तव में 2 और 4 से होकर जाता है। अध्याय विभाजन सबसे अच्छा नहीं है, यह मेरे ज्ञान के अनुसार सबसे अच्छा मार्ग है, तीनों पदों को मिलाकर और उन्हें प्रभु यीशु मसीह पर लागू करना।

क्योंकि परमेश्वर ने पुराने नियम में ऐतिहासिक पद दिए थे, एक भविष्यवक्ता, पुजारी, भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा, ताकि वे अपने लोगों की अपनी कहानियों में और इस्राएल के इतिहास में सेवा कर सकें, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन उनका दीर्घकालिक लक्ष्य उन तीन पदों को एकजुट करना था, जो पुराने नियम में अनसुने थे। उदाहरण के लिए, राजाओं को पुरोहिती के कामों में उलझना नहीं चाहिए था।

उन तीनों पदों को एक व्यक्ति, उसके पुत्र में मिला दें, जिसे वह बिना किसी सीमा के भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा बनने की आत्मा देगा। इसलिए, मैं इब्रानियों 1:1 और 2 पर वापस आऊंगा, प्रभु की इच्छा से, लेकिन यीशु एक भविष्यवक्ता से कहीं बढ़कर है। यीशु स्वयं परमेश्वर का वचन है, जैसा कि हम यूहन्ना अध्याय 1 से देखते हैं।

हम इसे अपने अगले व्याख्यान में कुछ क्षणों में और अधिक विस्तार से देखेंगे जब हम वास्तव में इसे फिर से लेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्य पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, मसीह के तीन पद, पैगंबर, पुजारी और राजा, भाग 2।